भारत में जनसंख्या वृद्धि नियोजन का विश्लेषणात्मक अध्ययन

अभिषेक कुमार सिंह
शोधार्थी– नेट (जे.आर.एफ.)
टी.डी.पी.जी. कॉलेज, जौनपुर उ.प्र.
मार्गदर्शक
डॉ. मनोज कुमार सिंह (भूगोल)

शोध सार

जनसंख्या की दृष्टि से भारत का विश्व में द्वितीय स्थान है। सन् 2022 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 1.413 बिलियन है तथा पूरी जनसंख्या 8 बिलियन अनुमानित की गई थी। यह विश्व की जनसंख्या का लगभग 18 प्रतिशत है। दूसरे शब्दों में विश्व का हर छठां व्यक्ति भारतीय है, लेकिन भारत में विश्व के भू–क्षेत्र का 2.4 प्रतिशत भाग ही उपलब्ध है। इस तरह क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व के अपेक्षाकृत एक बहुत छोटे भाग में विश्व जनसंख्या एक बहुत बड़ा भाग रहता है। यदि हम अन्य देशों से तुलना करें, तो पता चलता है कि क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत की जनसंख्या अनेक देशों से कहीं अधिक है। यदि हम यू.एस.ए., इण्डोनेशिया, पाकिस्तान, जापान, ब्राजील, बांग्लादेश और नाइजीरिया इन सात देशों की कुल जनसंख्या जोड़ लें, तो भी भारत की जनसंख्या इनसे अधिक ही है। हम मानते है कि भारत प्रतिवर्ष एक ऑस्ट्रेलिया पैदा करता है, वही प्रत्येक दशक में एक ब्राजील को पैदा करता है। परन्तु यदि हम क्षेत्रफल को लें, तो केवल अमेरिका का क्षेत्रफल ही भारत के क्षेत्रफल से लगभग तीन गुना अधिक है।

मुख्य बिन्दु– जनसंख्या, नियोजन, भू–क्षेत्र, अपेक्षाकृत, जनसांख्यिकीय।

भारत में हर 1 सेकेन्ड में 49 बच्चे पैदा होत है और इस प्रकार यहाँ प्रत्येक वर्ष आस्ट्रेलिया की जनसंख्या के बराबर जनवृद्धि हो जाती है। जबकि भारत में विश्व की 18ः जनसंख्या निवास करती है, तब भारत की राष्ट्रीय आय, विश्व की आय का केवल 1.5 ही है।

2021–22 की समान तिमाही में यह 51.27 लाख करोड़ रूपये थी। 2021–22 में मौजूदा कीमत पर जी.डी.पी 7 फीसदी बढ़ी है। इसके अन्तर्गत सकल मूल्यवर्धन (जी.वी.ए.) 12 फीसदी बढ़कर 34.41 लाख करोड़ रूपये रहा। वास्तविक जी.डी.पी. 2020 की अप्रैल–जून तिमाही में 27.03 लाख करोड़ रूपये थी। प्रति व्यक्ति आय विभिन्न देशों के अलग–अलग जीवन स्तर का एक महत्वपूर्ण सूचकांक होती है। हमारी सालाना कमाई 1.28 लाख होती है। जबकि यू.पी. की ळक्च 19.2 लाख करोड़ और प्रति व्यक्ति आय 81520 जो अन्य राज्यों से बहुत कम है। तथा औसत प्रति व्यक्ति आय भारत का 150000 है।

शोध प्रपत्र

विकासशील देशों में तेजी से बढ़ रही जनसंख्या उनके विकास में कहाँ तक बाधक सिद्ध होती है? जनसंख्या वृद्धि की प्रभावशाली नीति की सहायता से क्या देश की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन लाया जा सकता है? ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं, जिनका वर्तमान सन्दर्भ में जनसंख्या वृद्धि नियोजन से गहरा सम्बन्ध है।

पश्चिमी देशों के जनसांख्यिकीय विकास के अध्ययन के बाद अनेक शोधकर्त्ताओं ने यह अनुमान लगाया है कि ऐतिहासिक दृष्टि से जनसंख्या में जनसांख्यिकीय संक्रमण होता है, जिसका अभिप्राय यह है

कि जनसंख्या में परिवर्तन लगभग सुनिश्चित अवस्थाओं से होकर गुजरता है। पहली अवस्था की विशेषता यह है कि इसमें जनसंख्या प्रायः स्थिर रहती है, ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि जन्म दर तो ऊँची होती है, परन्तु मृत्युदर भी ऊँची ही रहती है तथा इस प्रकार जनसंख्या में वृद्धि नहीं हो पाती। जनसांख्यिकीय संक्रमण की दूसरी अवस्था में आर्थिक विकास, उत्तम आहार, उच्च रहन–सहन एवं चिकित्सा सुविधाओं में सुधार से मृत्यु दर में ह्रास होने लगता है, परन्तु जन्म दर उच्च ही बनी रहती है। इसका परिणाम यह होता है कि जनसंख्या की शुद्ध वृद्धि दर बढ़ती है, जिससे जनसंख्या में तेजी से बढ़ने की प्रवृत्ति होती है। तीसरी अवस्था में, जबकि देश आर्थिक दृष्टि से उन्नत अवस्था में होता है, निम्न मृत्यु दर में गिरावट तो आती है, लेकिन गिरावट की दर बहुत कम होती है। इसके विपरीत, जन्म दर में गिरावट बहुत तेजी से होती है। परन्तु जन्म दर में गिरावट होने के साथ–साथ उसमें गिरावट की मात्रा कम होती जाती है। इस प्रकार जन्म और मृत्यु की दरें स्थिर हो जाती हैं, जिसका परिणाम यह होता है कि जनसंख्या वृद्धि की दर बहुत धीमी होती है। भारत अभी तीसरी अवस्था में है।

वर्तमान समय में भारत जनसंख्या विस्फोट का सामना कर रहा है। जन्म दर का तात्पर्य और अधिक बच्चों का होना, इस प्रकार कुल जनसंख्या में उनका अनुपात बढ़ जाता है। परिणामस्वरूप श्रमबल पर निर्भर करने वालों की संख्या बढ़ जाती है। इस पराश्रित जनसंख्या का राष्ट्रीय आय के उत्पादन में कोई योगदान नहीं है, लेकिन स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा, आवास, पेयजल पूर्ति आदि सामाजिक सेवाओं का बहुत बड़ा भाग उन्हीं में चला जाता है। वर्तमान समय में भी आधारिक संरचना सुविधाओं और संसाधनों पर बहुत बड़ा बोझ पड़ रहा है तथा दिन–प्रति–दिन जनसंख्या में वृद्धि होने से विद्यमान सुविधाएँ अपर्याप्त होती जा रही हैं।

"भारत में 1901 से 1911 के मध्य इन दस वर्षों में 1.14 प्रतिशत जनसंख्या की वृद्धि हुई थी। सन् 1901 (26.5 प्रतिशत) को छोड़कर प्रत्येक दसवर्षीय अन्तराल में वृद्धि पायी गयी है। ग्रामीण एंव नगरीय दोनों ही क्षेत्रों में आशा से अधिक वृद्धि हुई है। जनसंख्या वृद्धि के निम्न कारण महत्त्व रखते हैं।"[i]

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी बचपन में विवाह करने का प्रचलन है। शिक्षित एवं जागरूक लोगों को छोड़कर सभी जातियों एवं धर्म में कम आयु में ही विवाह कर दिये जाते हैं। इस कारण महिलाओं की स्थिति ऐसी हो जाती है कि वे अपने समस्त जनन– आयु में बच्चों को जन्म दे सकती हैं। 18 वर्ष से कम आयु की लड़कियों और 21 वर्ष से कम आयु के लड़कों के विवाह पर कानूनी प्रतिबन्ध के बावजूद बाल विवाह अभी भी इस पिछड़े क्षेत्र में व्यापक रूप से हो रहे हैं।

माता–पिता अनेक कारणों से पुत्र पैदा करना चाहते हैं। अपनी वृद्धावस्था में सुरक्षा, वंश को आगे चलाना, मृत्यु के बाद संस्कार करना तथा अन्य मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक कारण हैं। इन कारणों से वे तब तक बच्चे पैदा करते रहते हैं, जब तक एक पुत्र पैदा न हो जाए। गरीब परिवारों के माता–पिता यह सोचते हैं कि जितने अधिक बच्चे होंगे, उतनी ही अधिक मजदूरी कमा कर वे लायेंगे। इसीलिए वे बच्चों की संख्या कम करने की आवश्यकता महसूस नहीं करते हैं।

इस कारण से भी माता–पिता अधिक सन्तानें उत्पन्न करने की सोचते हैं, ताकि कुछ जिंदा रह जाएँ। भारत के निम्न एवं पिछड़ी जातियों की आज भी यही सोच रहती है। **"भारत में निरक्षरता का प्रतिशत है। विशेषकर महिलाओं के बीच यह स्थिति (32.52 प्रतिशत) और भी दयनीय है। इस कारण लोग जन्म– नियन्त्रण की विधियों से अनभिज्ञ रह जाते हैं। इसके अतिरिक्त निरक्षरता के कारण ही**

बाल–विवाह जैसी कुरीतियों में फँस जाते हैं। जन्म– नियन्त्रण सम्बन्धी पोस्टर एवं छपी हुई सामग्री का प्रचार–प्रसार नहीं हो पाता है।''[ii]

परिवार के सदस्यों, पास–पड़ोस तथा समुदाय की ओर से छोटे परिवार के आदर्श को सामान्यतः सामाजिक सहायता उपलब्ध नहीं हो पाती है। जनसंख्या वृद्धि में गिरावट हो रही है किन्तु जनसंख्या वृद्धि तीव्र है। कि अल्प विकास और जनसंख्या विस्फोट के दुष्चक्र से बचने के लिए इस समस्या से शीघ्र निबटना होगा।

जनसंख्या वृद्धि के कारण–

1. पुत्र की आशा एवं पुत्र को वंशज मानना।
2. स्वास्थ्य सुविधाओं पर मृत्यु दर से
3. शिक्षा की कमी
4. जागरूता की कमी
5. गरीबी
6. बेरोजगारी
7. कम उम्र में विवाह

जनसंख्या वृद्धि को रोके कैसे? आज आवश्यकता इस बात की है कि परिवार कल्याण सेवाओं तथा समुचित जनसंख्या नीति का सहारा लेकर जनसंख्या वृद्धि को कैसे रोका जाये। **''राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम की संशोधित नीति के अनुसार 1986–90 (रैना 1988) के अन्तर्गत निम्नलिखित विशिष्ट लक्ष्यों तक पहुँचने का प्रयास किया गया था–''**[iii] **एन.एफ.एच.एस.–5 (1992–93) से एन.एफ.एच.एस.–5 तक के सफर में दिखाई देता है।''**[iv]

- महिलाओं के विवाह की माध्य आयु (डमंद ंहम) को बढ़ाकर 20 वर्ष से अधिक करना।
- प्रत्येक परिवार दो बच्चों के आकार को प्रोत्साहन देना।
- गर्भ निरोधकों की माँग में अत्यधिक वृद्धि करना, जिससे दम्पति संरक्षण दर 42 प्रतिशत से अधिक हो सके।
- आधारिक संरचना और सेवाओं की कोटि में सुधार लाना तथा उन्हें और अधिक प्रभावशाली बनाना।
- व्यापक तौर पर प्रतिरक्षण (इम्युनाइजेशन) करके और जीवन–रक्षक घोल (ओरल रिहाइड्रेशन थैरेपी व्ज) विधि को प्रोत्साहन देकर अधिक से अधिक बच्चों को बचाना।
- कार्यक्रम के प्रबन्ध को सभी स्तरों पर और अधिक व्यवस्थित तथा कुशल बनाना।
- सामाजिक–आर्थिक मामलों में आवश्यक हस्तक्षेप करके जन्म दर को घटाने के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करना।

लैंसेट द्वारा 195 देशों एवं क्षेत्रों के लिये वर्ष 2017 से वर्ष 2100 तक प्रजनन क्षमता, मृत्यु दर और प्रवास एवं जनसंख्या परिदृश्य के संदर्भ में वैश्विक पूर्वानुमान विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इस विश्लेषण के अनुसार– वर्ष 2048 में भारत की जनसंख्या 1.6 बिलियन आबादी के साथ अपने शीर्ष स्तर पर होगी। **"किन्तु यू.एन.ओ. रिपोर्ट के अनुसार 2023 में पहले पर ही आ जायेगा।"**[v]

इस प्रकार लैंसेट अध्ययन के अनुसार– वर्ष 2048 में भारत की जनसंख्या विश्व सर्वाधिक होने का अनुमान लगाया गया है। 2023 में 25 वर्ष पहले हो जायेगा। जो वर्ष 2017 की 1.38 बिलियन जनसंख्या

से बढ़कर लगभग 1.6 बिलियन हो जाएगी। कम होकर वर्ष 2100 में भारत की जनसंख्या 1.09 बिलियन अनुमानित की गई है।

अध्ययन के अनुसार– भारत में 15–64 वर्ष की आयु के कामकाजी वयस्कों की संख्या में गिरावट का अनुमान लगाया गया है जो वर्ष 2100 में वर्ष 2017 के लगभग 762 मिलियन से घटकर 578 मिलियन संभावित है। हालांकि, भारत में वर्ष 2100 तक विश्व की सर्वाधिक कामकाजी उम्र की जनसंख्या अनुमानित की गई है। वहीं पर चीन में कार्यबल/कामकाजी जनसंख्या वर्ष 2100 में वर्ष 2017 के 950 मिलियन से घटकर 357 मिलियन के स्तर पर पहुँच सकती है।

एक अध्ययन के अनुसार, भारत की कुल प्रजनन दर (ज्वजंस थ्मतजपसपजल त्ंजम – ज्थ्त्) वर्ष 2019 में घटकर 2.0 से नीचे आ गई जो वर्ष 2100 में 1.29 के स्तर पर होगी। कुल प्रजनन दर बच्चों की वह संख्या है जो औसतन किसी स्त्री के संपूर्ण प्रजनन काल (सामान्यत 15 से 49 वर्ष के बीच) में पैदा होते हैं। अर्थात यह प्रति 1000 स्त्रियों की इकाई के पीछे जीवित जन्मे बच्चों की संख्या है।

अध्ययन में वर्ष 2040 तक भारत की कुल प्रजनन दर गिरावट के साथ स्थिर होने का अनुमान है। रिपोर्ट के अनुसार, विश्व की जनसंख्या वर्ष 2064 में लगभग 9.7 बिलियन होने का अनुमान लगाया गया है।

अध्ययन के अनुसार, वर्ष 2100 में कुल 195 देशों में से 183 देशों में प्रति महिला कुल प्रजनन दर 2.2 के प्रतिस्थापन स्तर से नीचे जाने का अनुमान है। विश्व स्तर पर कुल प्रजनन दर वर्ष 2100 में 1. 66 होने का अनुमान लगाया गया है जो वर्ष 2017 में 2.37 थी। वर्ष 2100 में कुल प्रजनन दर वर्ष 2017 की तुलना में–2.0 की न्यूनतम दर से कम होगी।

लैंसेट अध्ययन के अनुसार, वैश्विक आयु संरचना में भारी बदलाव का अनुमान लगाया गया है। 65 वर्ष से अधिक आयु वालों की संख्या वर्ष 2000 की तुलना में वर्ष 2100 में 1.7 अरब से बढ़कर 2.37 बिलियन के स्तर पर पहुँचने का अनुमान है।

रिपोर्ट में भारत एवं चीन जैसे देशों में कामकाजी उम्र की आबादी में नाटकीय रूप से गिरावट होना का भी पूर्वानुमान प्रस्तुत किया गया है जिसके चलते आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न होगी जो वैश्विक शक्तियों में बदलाव को इंगित करेगा।चिकित्सा सेवाओं में वृद्धि, कम आयु में विवाह, निम्न साक्षरता, परिवार नियोजन के प्रति विमुखता, गरीबी और जनसंख्या विरोधाभास आदि ने जनसंख्या बढ़ाने में योगदान किया है।

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2020 की घोषणा गर्भ–निरोध, स्वास्थ्य संबंधी आधारभूत ढाँचा, स्वास्थ्य कर्मचारियों और एकीकृत सेवा डिलीवरी की अतृप्त मांगों को पूरा करने के अविलम्ब लक्ष्य को हासिल करने के लिये की गई थी। इस नीति का उद्देश्य कुल प्रजनकता को प्रतिस्थापन स्तर यानी 2.1 बच्चे प्रति जोड़ा तक लाना है जो इसका मध्य–सत्रीय लक्ष्य है। वर्ष 2045 तक जनसंख्या को स्थिर करना इसका दूरवर्ती लक्ष्य था। जिसको बढ़ाकर 2070 कर दिया गया है।

स्वास्थ्य, जनसंख्या वृद्धि और प्रजनन दर पर चर्चा की गयी प्रजनन दर 2.2 से घटकर 2.0 हो गई। प्रजनन के समय पहले औसत आयु 21.2 वर्ष थी। मोटापा स्त्री का 24 प्रतिशत तथा आदमी का 23 प्रतिशत होना चाहिए। गर्भ निरोधक 54 से घटकर 67 प्रतिशत हो गया।

आयोग में प्रेरणा और प्रोत्साहन संबंधी 16 युक्तियाँ भी बताई गई हैं, जिनमें पंचायतों और ज़िला परिषदों को छोटे परिवारों को

प्रोत्साहित करने पर पारितोषिक देना, बाल विवाह विरोधी कानून और प्रसव–पूर्व गर्भ जाँच तकनीक कानून का कड़ाई से पालन, दो बच्चों के प्रतिमान को प्रोत्साहन और नसबंदी की सुविधा को पारितोषिक और प्रोत्साहनों के जरिये मज़बूती प्रदान करना है।

उपर्युक्त विश्लेषण एवं राष्ट्रीय जनसंख्या वृद्धि नियोजन के अध्ययनोपरान्त शोधकर्त्ता ने भारत की भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक कारकों का विश्लेषण कर निम्न सुझाव जनसंख्या वृद्धि नियोजन हेतु प्रस्तावित किए हैं–

ग्राम स्तर पर एक स्वास्थ्य गाइड की नियुक्ति की जाए, जो दिन–प्रतिदिन स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यों करने के अतिरिक्त योग्य दम्पतियों को परिवार नियोजन के सम्बन्ध में जानकारी उपलब्ध कराये। इसके अतिरिक्त कंडोम और गर्भ निरोधक गोलियों का वितरण, बंध्याकरण (नसबन्दी) के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों, नजदीकी उपकेन्द्रों में भेजना सुनिश्चित करे।

ग्राम स्तर पर ही एक महिला कार्यकर्त्ता (दाई) की नियुक्ति की जाए जो स्थायी रूप से गाँव में निवास करती हो दाई को प्रशिक्षित होना आवश्यक हो। बच्चा पैदा करने की उम्र वाली महिलाओं को छोटे परिवार के आदर्श को अपनाने के लिए प्रेरित करे। ऐसी दाई की परिवार नियोजन सम्बन्धी सलाह एवं भूमिका महत्त्वपूर्ण साबित हो सकती है। क्योंकि प्रसव पूर्व प्रसवोत्तर काल में यह दाई पारिवारिक सदस्य के रूप में गर्भवती महिलाओं को शिक्षित कर सकती है।

स्वास्थ्य केन्द्रों से उपकेन्द्रों एवं उपकेन्द्रों से सीधे गाँव तक इन्ही कार्यकत्ताओं के माध्यम से कंडोमों एवं पिलों (गोलियों) का वितरण सुनिश्चित कराया जाए। क्षेत्र की महिलाएँ अधिक शिक्षित न

होने के कारण इस सम्बन्ध में किसी से खुलकर बात करने में शर्म महसूस करती हैं। ऐसे में ऐसी दाइयों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होगी।

"प्रत्येक स्वास्थ्य केन्द्रों के स्टाफ में वृद्धि की जाए और उन्हें प्रेरित किया जाए कि वे क्षेत्र में जाकर जागरूकता अभियान चलायें। जिले के बड़े अधिकारियों द्वारा ऐसे कार्यक्रमों का समय–समय पर स्थानीय निरीक्षण किया जाए। ग्राम पंचायत की महिला सदस्यों को इस कार्यक्रम में सम्मिलित कर उनकी भागीदारी सुनिश्चित की जा सकती है। ऐसे वार्ड मेम्बरों को समय–समय पर परिवार कल्याण कार्यक्रम की सहभागिता हेतु पुरस्कृत किया जाए।"[vi]

ऐसे ग्रामीण जो आदर्श परिवार अपनाते हैं, उन्हें ग्राम समाज की भूमि (पट्टे) आवंटित किये जाएँ तथा निःशुल्क आवास की व्यवस्था कराई जाए। इस कार्य में संलग्न कर्मचारियों एवं अधिकारियों को ईमानदारी हेतु प्रेरित किया जाए। एक पुत्र या पुत्री वाले ऐसे जोड़े को, जिन्होंने परिवार नियोजन जैसे पुनीत कार्यक्रम में भाग लेकर अपना सहयोग दिया हो उसे उसी ग्राम में सार्वजनिक रूप से सम्मानित एवं पुरस्कृत किया जाए। ऐसा करने से अन्य ग्रामीण इसमें अपना योगदान देने हेतु प्रेरित होंगे।

किसी समाज में जनसंख्या का आकार सामाजिक संरचना को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। जनसंख्या के आकार का जीवन स्तर से घनिष्ठ सम्बन्ध है और जीवन स्तर हमारे सामाजिक मूल्यों, विश्वासों और सामाजिक संगठन को प्रभावित करता है। जनसंख्या के आकार में होने वाले परिवर्तन अनेक प्रक्रियाओं के माध्यम से निम्नलिखित क्षेत्रों में परिवर्तन उत्पन्न करते हैं। जैसे– जन्मदर में यदि वृद्धि हो रही है तथा मृत्युदर भी बढ़ रही है तो उच्च जन्मदर तथा उच्च मृत्यु दर के कारण जनसंख्या के आकार में वृद्धि नहीं होगी। जन्मदर वृद्धि अनेक

कारणों से प्रभावित होती है प्रजनन क्षमता में वृद्धि, रोगों से निजात, विवाह की आयु में कमी तथा प्रकृति से अधिक अनुकूल करने की क्षमता। जन्मदर में होने वाली वृद्धि चाहे किसी भी कारण से प्रभावित हो लेकिन इतना अवश्य है कि जन्मदर में वृद्धि होने से जनसंख्या में वृद्धि होती है लेकिन उसके अनुपात में जीविका से साधनों में एकाएक वृद्धि नहीं होती इससे समाज में गरीबी, बीमारी व बेकारी की स्थिति उत्पन्न होती है, कार्य क्षमता के प्रभावित होने के साथ ही साथ लोगों का जीवन स्तर भी गिरता है।

संदर्भ सूची

[i] Agrawal S.N., Population, New Delhi, 1967

[ii] Agrawal S.N., Population, New Delhi, 1967, P. 46

[iii] Arora, R.C., Integrated Rural Development, S. Chand and Co. Ltd., New Delhi, 1979

[iv] ;w-,u-vks- fjiksVZ 2022

[v] ,u-,Q-,p-,l-&5 ¼2019&2021½

[vi] Barclay G.W., Techniques of Population analysis, Jones wiley and sons. Inc. New York, 1958

Contributors Details:

अभिषेक कुमार सिंह
शोधार्थी– नेट (जे.आर.एफ.)
टी.डी.पी.जी. कॉलेज, जौनपुर उ.प्र.
मार्गदर्शक डॉ. मनोज कुमार सिंह
भूगोल